

नमो नैला कनाथायाकायुतवचचक्षुमिति नयनैत्यालव
कनादादमिश्रताविति माचनभरे ॥ अथ चिद्विषयवृत्तमलला
कस्यचगुर्ववृद्धताविविधं नस्तद्वदव ॥ २ ॥ अथ च कस्य
दागालामनसि तां च विदुः तयोः सच जयानि सुलो कनाथं ॥ अथ च ॥

पाद
॥ ३ ॥ अथ नैला कनाथायाकायुतवचचक्षुमिति नयनैत्यालव
॥ ४ ॥ अथ चिद्विषयवृत्तमलला कस्यचगुर्ववृद्धताविविधं
नस्तद्वदव ॥ ५ ॥ अथ च कस्य दागालामनसि तां च विदुः
तयोः सच जयानि सुलो कनाथं ॥ अथ च ॥ ६ ॥ अथ च
॥ ७ ॥ अथ च ॥ ८ ॥ अथ च ॥ ९ ॥ अथ च ॥ १० ॥ अथ च ॥

ॐ

अतितावमा द्रुपदा मा आ वं ॥ १ ॥ आ सुमहरे यरुम वरु यंता
 वनाही जयला कं रमा द्रुपदा मा आ वं ॥ १ ॥ ~~अतितावमा द्रुपदा~~
 वरु यंता वना सिज म ~~अतितावमा द्रुपदा~~ वं ॥ २ ॥ अतिता र
 मिचं व व निमल वदना जी कवूनि ध्व व अतिता इष्टु कति

धि ता अतिता वं ॥ आ वं ॥ २ ॥ ॐ ति ते ला कना थं तु प्रं म

फ ॥ ५ ॥

अतिता वं ॥ कां पूतल वल भूमी विजय नेपाल

आ. न. क. र. वि.
 1974 AD

नेम्ये १७

245

२॥ आहा ३॥ व ३॥ ह ॥ ॐ धा जिं ता कू नां ध नां दि न न धि न उ ठ नं ध नां दि
था था गु गु द र व ल धि नं ता कू नां ध ॥ मां ॥ आहा ३॥ व ३॥ ह ॥ ॐ द धा
ग धा २ जि गि रि गि यं २ जि न थ कि जिं ॥ उ द धिं उ द द धा ॥ धा
ॐ धा ॥ वां ॥ व ह ॥ ध ध ध ग २ धा ग र थ उ ठ नं ता कू नि कू त क
धा ॥ जिं जि जि ३ ॥ ॥ ताल सा ध ॥ वां ॥ व ह ॥ ता मं द्य मं दि
जि २ ता मं दु मं ता मं गु मं ता मं गुं गुं मं न क ठ मं गुं ता मं न क मं

हुंतामगुगुदम ॥ मां ॥ ववह ॥ नाअदाअदिगि२ नाअनुअं२
 ताअहुहुअनकगअहुताअनकअहुताअगुगुदम ॥ वां ॥ ता
 अदाअ ॥ गगता ॥ थालागसिंताकिं२ थालागसिंता ॥ नाखयं
 यं ॥ थगसिंदिगि२ नाथगसिंदिगिताः नाता ॥ हुंअंहुं
 अ ॥ दिगि३ ॥ ॥ तालऊति ॥ गह ॥ नृत्तंअंक२ वृत्त
 अ ॥ अ ॥ अ ॥ अताअ ॥ मां ॥ गह ॥ नृत्तंअंक३ अ ॥ अ ॥ अताअ ॥ ता

महुं॥ ताता॥ था ला ग सिं ता किं २ ग ऊ था लि कीं ता किं २
था ला जियं॥ जियं था ला जियं॥ ६ गाः ता म उ ता म॥
दि गि ३ ॥ ताल रु ति वा मां ॥ च ह ॥ ता ता पु मु दी २ म
उ ता म म उ ता ग मः पु म म उ ता म दि गि २ ता म॥ त ह ॥
क था ग धा॥ धा दी दी दी द ल ग न धा दी धा धा मिं॥ ता ता था
ला ग सिं ता कि २ ग ऊ था लि कीं ता किं २ था ला जियं॥ जियं

धा जियं॥ ६ गाः ता म उ ता म॥ दि गि ३ ॥ ॥ ग नं मा
नं॥ ताल म य ॥ त ह ॥ न ठ धि ता किं दां ध न कि दां द ल र
ग धा धा धि २॥ धि नं ध दी धा धा मिं॥ वां॥ ता म म उ ता म
॥ क उ ॥ ता ता था ला ग सिं ता किं २॥ था लि कीं ता किं २ था
ला जियं॥ जियं॥ था ला जियं॥ ६ गाः ता म उ ता म॥ दि
गि ३ ॥ ताल ॥ ग नि ॥ च ह ॥ वां॥ द ठ धा रा ध धा ला जि ठ

दध्ना कथा जिहं धधधध ॥ मां गवह ॥ जिहं धना धधः
दा जिगिदैः धा कथा जिहं धध ॥ मां गवह ॥ धगं धधि
धगसदधधध दधना ॥ वां ॥ न किधध ॥ न मं ॥ गुं ॥ मं ॥ न मं
न मं ॥ ना ना धा ला ग सिं ना किं २ ॥ धा लि के ना किं २ ॥ धा ला
जियं ॥ धि यः धा ला जियं ॥ धना ॥ ना मं पुं ना मं ॥ दिगि ३ ॥
ना ल ॥ क ना ल ॥ वां ॥ मां ॥ गवह ॥ न धि क न र व धां ॥ दा ह कि न

धना दधधग धा ॥ धा ॥ धा ना जियं २ ॥ धा ॥ वां ॥ गवह ॥ न न क न
मदा मदा क न मं ॥ धग २ ॥ धा जिं ना क नां धा ॥ ना ना धा ला ग
सिं ना किं २ ॥ धा लि के ना किं २ ॥ धा ला जियं ॥ धि यः धा ला
जियं ॥ धना ॥ ना मं पुं ना मं ॥ ॥



[illegible]

天竺

五

[illegible]

लोककण्ठ

下

अभिप्रति ६

[illegible]

दानवले॥
मईशीकण्ड
त्रिम्बयिदुम १

[illegible]

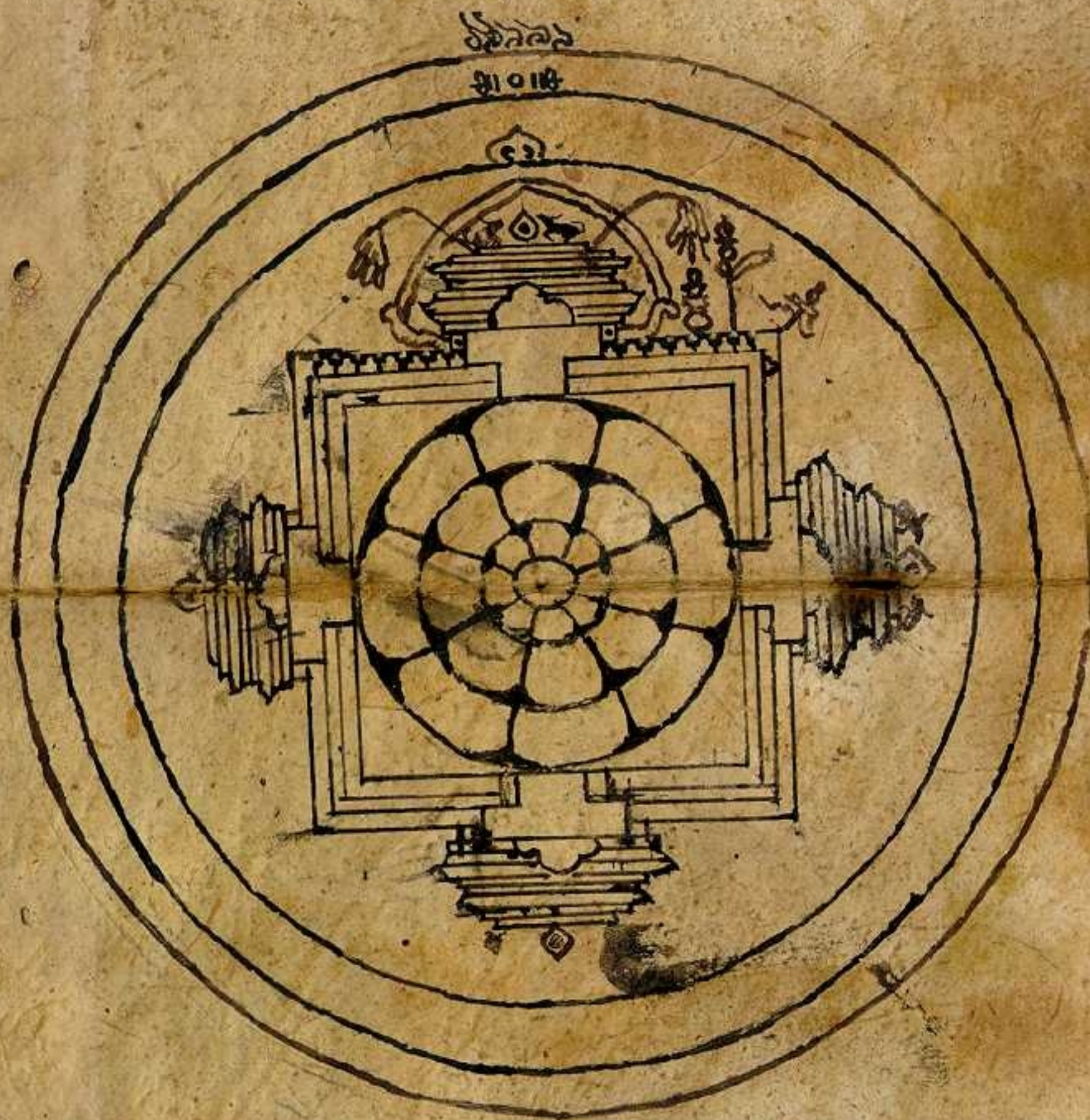
संक्षिप्तगण

[illegible]

अनुसिद्ध ३ द्रवमनुष्या ४

[illegible]

रुसन् कुम्भीः शुकुसमपि १
सिद्धिमूनि २



[illegible]

दहाका अगु पु १३६॥

[illegible]

॥ अष्टावक्र ॥

[illegible]

वहिका ॥



Handwritten text in Devanagari script, likely a title or chapter heading, located on the upper right page. The text is written in a cursive style and appears to be "संस्कृत-भाषा-सहित-प्रकरणम्".

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or chapter heading, located on the lower right page. The text is written in a cursive style and appears to be "संस्कृत-भाषा-सहित-प्रकरणम्".

A photograph of a heavily damaged, dark, and stained piece of paper or parchment, likely a manuscript page. The surface is covered in large, irregular dark stains and lighter, yellowish-brown patches, suggesting water damage or mold. Faint, illegible markings are visible on the surface.

[illegible]



॥ द्विष्टमः ॥ पापं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ गंगाकांक्षालि ॥ ०० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वपापविनाशक ॥ १ ॥
 ॥ प्रवृत्तः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ जपनियमः ॥ कला ॥
 ॥ प्रवृत्तः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ मायिप्रकाश ॥ ॥ ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वपापविनाशक ॥ ॥ ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वपापविनाशक ॥ ॥ ॥

आर्य समाज 1944 ARCHIVES		
----------------------------	--	--

१४ ॥ अमनदमनदीना, नित्ययागमयूका, वरुवि विधिविधाना,
 प्रकटदग्धदहा ४ डक यमकि विदीना, मयिनग्नप्रहणा, दगावल ५
 ॥ १५ ॥ अथययिदमदका, वल्लहगगिमाया, कटपूत्रदविमिष्ट,
 यागवामीकगर्ग। यवकिजयनमका, मादिनाकपिसूफी, दगावल ६
 १६ ॥ यमवदूलाकवल, यकदेहा वरगन्दा, दिविदु विगमलेवा, लोके
 पालागथाने १ यवतिमदकटाक, निविताकपिसूफी, दगावल ७ ॥

म ३

॥ १७ ॥ रुकजलधिनिमग्ना, मदिआलादगांगी, मूनि कपि वरुना
 या, ग्रामिनामूठवणा ॥ ममसूखदुलहीना, वाविताकपिसूफी, दगावल
 ॥ १८ ॥ अरुहाननिद्रलजनी कमसिप्रसूफी, रुक्माविष्णवदेनविप्रया
 प्रधान, कालगुहागुरुदुर्लपविदुर्मान, जागर्हियंगतदगा, दल
 मादुसु रुम्मे ॥ १९ ॥ कीर्त्यवृष्णा, दुलगाणा, निपिदकिनाय, रुक्मि
 जनिनवमकमसूफी ॥ रुक्मनकपिगने वपिसूदुनस्य, नकीय

लोके सत्त्वमात्मसुखं ब्रह्म कृपा लाघु ब्रह्म ॥ १ ॥ सत्त्वमादधि
मध्यनिमग्नं कृष्णमहामिसमादि कृष्णं ॥ २ ॥ मासवधी ब्रह्ममादि ब्रह्मं ॥ ३ ॥
हिमहा कृष्णो मयि वरुण ॥ ४ ॥ कृष्णमिनि लाघु कृष्णं ॥ ५ ॥ मन्त्रमहा
कृष्णं विष्णु ब्रह्म ॥ ६ ॥ पात्रय कृष्णं वन न वला कृष्णं ॥ ७ ॥ यावदधी विष्णु मिनि वि
ष्णु ॥ ८ ॥ कृष्णमन्त्र नाग कृष्णं मयस्य ॥ ९ ॥ कृष्णमन्त्र नाग कृष्णं मयस्य ॥ १० ॥
मया कृष्णं पात्रय मयस्य ॥ ११ ॥ नाग यस्मिन् पुनि कायिक ॥ १२ ॥ ४ ॥ यस्मिन् वि

मसत्त्वमादधि ॥ लाकानि हं कृष्णं कृष्णं ॥ १ ॥ लाकानि हं कृष्णं कृष्णं ॥ २ ॥
यायि कृष्णं कृष्णं विष्णु ॥ ३ ॥ सत्त्वमादधि विष्णु मयस्य ॥ ४ ॥
यस्य मन्त्रादि कृष्णं मयि पत्र विष्णु ॥ ५ ॥ यदि दा निमग्न ममानस्य पार्थ ॥ ६ ॥ यिना थ
कृष्णं मयि पार्थ ॥ ७ ॥ ५ ॥ दयमन्त्रादि मयस्य ॥ ८ ॥ मयि कृष्णं मयस्य ॥ ९ ॥
मयस्य ॥ १० ॥ सत्त्वमादधि विष्णु मयस्य ॥ ११ ॥ मयस्य ॥ १२ ॥
॥ १ ॥ मयस्य मयस्य विष्णु मयस्य ॥ १३ ॥ मयस्य ॥ १४ ॥

निष्कृष्टगवनेन न स्मिन्ननामि, यावन् न वक्तुं नैव विद्यामि ॥ ८ ॥ किं
 याधुषिकभादिष्यार्थं मयस्मिन्नगवनेन मा मक्तुमार्थं ॥ ९ ॥ याधुषिकपात्र
 वपुर्ध्वं, जनयसि दृष्ट्वा कथमविष्य ॥ १० ॥ ॥ समवर्धनापित्तमसि
 पवित्रं कथयसि कथं किमस्मिन्नदृष्ट्वा ॥ ११ ॥ स्मृत्तुं गवनेन न हि न वक्तुं
 कथं मा कथुमासि दृष्ट्वा ॥ १२ ॥ ॥ दक्षिणं वक्तुं मयः प्रकृतं न वक्तुं मयः
 वक्तुं मयः विविक्तं ॥ मां साक्षि विद्यासि कथं कथं, कथं नाधिस्थादृष्ट्वा मने

न ॥ ११ ॥ ॥ नृकनयुक्तिकाया इव सिद्धि, सिद्ध्या मयि न निम
 न्नुविशुद्धि, सिद्ध्या दुःखस्य निवृत्त्यर्थं वक्तुं, दुःखस्य दुःखस्य त्वं लोकं ॥ १२ ॥
 यं कथयन् वक्तुं विद्याय न दीना, विविधिया मिमंसा कथयन् दीना, विविधयः कथं
 वक्तुं मयः, विवर्तनं नृणां गुणगतीनां ॥ १३ ॥ ॥ न वक्तुं विद्याय न दीना, विविधयः कथं
 न, विविधया किमस्मिन्नगवनेन ॥ स वक्तुं निवृत्त्यर्थं वक्तुं मयः, विविधयः कथं
 विवर्तनं ॥ १४ ॥ ॥ न वक्तुं विद्याय न दीना, विविधयः कथं वक्तुं मयः, विविधयः कथं

मामहं नार्थः । लोमिदमनदिकमदिनपालिनालयजालामाकुरु ॥
 १५ ॥ अद्विषयं हि यद्यत्र मनसा ललकवद्रूपार्थं व्याकृतं यथा
 निर्दिष्टं जन्ममयामिनसकलं ॥ ० लमिनिमिर्गवनाविकर्तृ ॥ १६ ॥
 नत्तु भूमिपुत्रिममलाकं ॥ पुनश्च विविधं कलिलमया ॥ यनास्तु त्वपायि
 कइ ४ स्तु मगनिकवका मामिदमाकुरु ॥ १७ ॥ मादृष्टविनामनद
 त्वं स नमो ॥ दधिसक्तु पुनिकनका आयनवाकुरु त्वं गुणद्विज

* त्वं पलिमघिलजगत्सुददा ॥ २
 निशाकानमाकुरु ॥ १८ ॥ दलितसुगकाना नरु वनका त्वं प्राप्तिवद्रु
 इ ४ दिक्कसर्प ॥ निर्जितदुर्जयममथमाला त्वं सीतां कदा कदा चाले ॥
 १ ॥ सकलप्राननिकिच नददा ॥ रगवनननूपसक वृक्षमिध त्वं
 जनविधि ॥ का वृक्षवंध ॥ २० ॥ लीलावितविनक कर्तुं विरंग त्वं
 वद्वरविषयं यामं घा ॥ दियोध नममादिकविक त्वं यायकसाधनवि
 र्ग ॥ २१ ॥ यत्र मुख्य कर्षेन पिक्क वृक्षवा मयि यमिभाषेन क वा विरय

॥ कथमिदं मादमहावगदसः विषयसमिदाकृष्णलीकवना ॥ २२ ॥ सक
 लजनार्थं पुनित्यास्वना साकिं कवना नियतमरुलना ॥ यननवकसिष
 द्विषवर्कः रुगवनयवनामा विवृवर्कः ॥ २३ ॥ नाथकपाथायामवि
 सायाः सद्यप्रयथावदकुलधाया ॥ एकलकुलनिम्ना नरुवदुदः ॥ सम
 तिनिर्वर्कजनः मलिसमसय ॥ २४ ॥ ॐ किरुगवगममवः ॥ नाः यस्य
 ॥ ममननदं गदकुर्तु ॥ लरुदं ग्रीयाकलकायनवासं जनयकुसुन्दन

विविधिविलासं ॥ १५ ॥ ॐ किष्णामहेश्वरी ग्रीष्मार्थावलापिकं ध्वज
 द्वात्रकस्य यत्रपकिपाविमयिनः कर्णयविसमाय ॥ ॐ ॥ १॥
 नमालाकनाधाय ॥ लार्कं ध्वजं विमलं नूत्य कपादं विहं माग्नं
 तापुचिमं दमय नार्थवाय ॥ सर्वरुकादिपविपुर्तु विष्णुद्वन्द्वं कृनाधिका
 कावलनिर्गणिमसानमामि ॥ १ ॥ वेनयमंदवसनावदुधावकाः ॥

लदं नमस्कृतं नमामि ॥ १ ॥ वेनयवायुजनिता कममार्गसिद्धि, य
 लोकनाभमखगाधविनिःसृता सोऽयं वाममीवनवलाकुटिः कमलाजा
 मीश्याय धार्थ्यं लदं नमस्कृतं नमामि ॥ २ ॥ वेनयवायुजनिताय
 नमीष्ये तानां मंत्राधनार्थमुदमात्मगतात्मजयः यन्निःसृता वसुधैः
 दयवभायकस्मात्, उन्मथ्यसिद्धिं लदं नमस्कृतं नमामि ॥ ३ ॥
 वेनयममकलाय किलापि नावे, सीसिद्धिर्यप्रवलवकलपादयः

यन्निःसृता रुगवगाधवलाप्रसिद्धा, कुलाय नाभमममं नमस्कृतं नमामि ॥
 ॥ १० ॥ सीसावमकमपिसिद्धिं नमस्कृतं, कावन्धक्यरुववाविनि
 सखवर्गः ॥ ११ ॥ याल्लि किर्मलसदासिद्धिं, वामा रुवाक, मयमहासयवल
 पत्रमनमामि ॥ १२ ॥ एकलपादकलकनरुवत्सकन, याका कर्मव
 लेमनं नमलाकधामा, कल्याकदग्धरुवनं कलिना गुवद्धि, निस्वातः
 वायुवमककवनिर्हकस्मात् ॥ १३ ॥ रुकथीनामस्वधुगादिगतज

लन. संवात्रिंश्व वदु मयुगनाम खस्य ॥ कोटा दृक् जल धृजा यम ॥ ख
कस्य ॥ मापथा मीदृषा मदाक वरु ॥ कृष्णान् ॥ १३ ॥ कदको लोण वचन
नन वा नृप्यं सदर्शनिय वन कामल बालवर्द्ध ॥ इषलि मा व मथने ॥
आर्षि. विज्ञात इ ॥ यदय वं कृत्त मं छिन्नक ॥ १४ ॥ प्रयावना जननि
कटावलीसा. कोटीला वा वृषिकटास्यणि वा वृद्धाया ॥ कृष्णान्ध निद्राति न वृत्त
लि न स्ववक्त्रं श्रुमा वली व विमलान नूलक नक ॥ १५ ॥ स्वका किले गदि

मवेदलदिक प्रज्ञाने ॥ यका सिन कय कृष्ण स क मास सा सा ॥ य आन ॥
लिना कु द न वृथं न म न विना जि नि धिले न व का किले ॥ १६ ॥
विधुय को मा नि कर्म म न म न नूयाम मा सा दि न स प ॥
वार्थ स पादि न स व मं व न न मा रू मि न्व म जा जि न जि न ॥ १७ ॥
त निर्वान क व स्मि न् मि न् प्र हा स मा धि स्मि न् स दि न् दि न् ॥ १८ ॥
(गद्य) ॥ ज न् नि यं नि यं न मा मि रू मी न्व म वा जि न् जि न् ॥ १९ ॥

गरुडिमा लामृग संकलं कलं कलं ॥ कलं १४ स्वपानो हृदयं कजं कजं ॥ वतान
ग्रासादिन संवत्सरं नमामि रुमी श्वव माजिनं जिने ॥ १९ ॥ ॥ स्व
मधु ककुला यव पर्व ॥ गुहादि संज्ञा वसु संरु रं ॥ विकल्प
धनिद लकं लकं नमामि रुमि श्वव माजिनं जिने ॥ २० ॥ कथमा म
थना द्वय लं न लं ॥ लं न सत्य विपु विरु धर्म कथं ॥ कथनीय विपु जिने
सत्य पर्व ॥ प्रलम्भ धर्म नी श्वव माजिनं ॥ २१ ॥ वमनं निज मृदि

जगत्सर्वं लव सिद्ध मायन मायनं ॥ कवसा धि म स ल विपु द्वि पर्व
प्रलम्भ धर्म नी श्वव माजिनं ॥ २२ ॥ वमनिर्मित शा गप माथ म
नं वरु लं न निर्वजन धर्म धर्म ॥ धर्म नी श्व विरु धि न सिद्धि पर्व ॥ प्रल
मधु धर्म नी श्वव माजिनं ॥ २३ ॥ वमस स ल आद धि य लु म म
मुख सा धि न सर्व निर्वकि पर्व ॥ पद स ल म क ल नानु पर्व ॥ प्रल मा
धर्म नी श्वव माजिनं ॥ २४ ॥ लोकं श्व माय न व व ल माला

मयीकवध्री वत्र वलपादं ॥ अवाधि ~~य~~ यरुनलुहं पुविहं, तमेव
लाकीरुसमकरुद्रं ॥ २५ ॥ ॐ गिर्यामदायावलाकिगन्धवस
वममालाकवकाणिसमाफ ॥ ॐ ॥ २६ ॥ ॥ ११ नमो लोकनाथाय
रुवनप्रमदन्दिहलोकगुर्व ॥ अमलाधियगिरिगुनिवृक्षवर्च ॥ मुनिजाऊव
वद्विमिहिकव ॥ प्रलसामिवलाकिगनाथकर्म ॥ १ ॥ मृगनाथ
वपसूयधर्मवद्वमकलरुषिगददधर्म ॥ अमिताभममममम

निधर्मकनकांजलिरुषिगवामकर्म ॥ २ ॥ कटिलामलपिंगल
प्रजटगगिरिर्वसमकलपूषुमूर्ध ॥ कमलायनलोचनयावृवर्च
मखलुषिपुल्लगधकट ॥ ३ ॥ अधर्मजिह्वककनाशिसर्म
वद्वपूजगजिह्वमयवृद्ध ॥ वद्वलकलरुषिगवाहूयगकनूकोमल
मद्ववयालिकर्म ॥ ४ ॥ मृगवर्मलिखितवामकनूषुगकलुल
मल्लिकलालधर्म ॥ कमलादलेकामलनाशिसर्म ॥ मलिमल्लिकममवद्वम

पर्व ॥ ७ ॥ कटिवाद्युक्तविशुद्धसुधर्मं जिनज्ञानमहादययावगते
नि ॥ वदुपुत्रसुपाजिगलसुधर्मि दालवाधिरुवदुसौम्यकर्म ॥ ७
गुरुणाकिकर्म विरुवाकुकर्म सवर्मयवर्मसुनिदहधर्म विविध्याकर्म
लनिर्जिगमालवर्ल दणपालमिनापवमार्थकर्म ॥ ७ ॥ यशुप्रसक्त
विदावगवदकर्म कथनादयज्ञानविधाधकर्म मनिनूपुत्रगर्जितपा
दयुगं जगमस्तु विलंविगदहसगति ॥ ८ ॥ यत्रिपुत्रमहामुक्तम

वधिमि श्रीमादजवमार्तुवनिगगति ॥ ग्रीधानवकाशिनिसावर्मि क
म्लामयनिर्मलयावदुध ॥ ९ ॥ ॐ निग्रीयायावलीकिगव्यवः
स्यदन्दिवाकाशिकुलीविबयिगकाकुसमाप ॥ १० ॥
१ नेमावुजाय ॥ ७ किर्मग्रीयाधिसाधुक पूर्वप्रलदिपुत्र २ सखसदस
काटिधाकु यदिकावप्रकपिग ॥ १ ॥ ग्रीणाकाशिरुप्रलमनार्थपु
त्रकायगुलादधि २ दानशीलकमायसादी दीर्यधामनममागन ॥ १

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥